अवधेश कुमार सिनहा*

संथाल कबीलेके वार्षिक त्यौहार

प्रस्तुत लेखके द्वारा संथालोंके वार्षिक सामुदायिक त्यौहार चक्रका अध्ययन करनेकी कोशिश की गई है। इन त्यौहारोंको समझनेके लिये हजारीबाग जिला, (बिहार) के दो गांवोंमें से माहिती — संकलन १९६४-६५की सर्दियोंमें किया गया। इन उत्सवमय अवसरोंका विहंगावलोकन भी चन्द मूलभूत सवालोंको जन्म देता है। यथा, कबायली सामाजिक जीवनमें इन त्यौहारोंकी सामान्य भूमिका क्या है? कबायली जीवनमें ये कहां तक एकताके सूत्र बन पाते हैं? कबायली अर्थव्यवस्था और खासकर कृषि और वन्य-अर्थव्यवस्था से ये किस प्रकार सम्बन्धित हैं? इन त्यौहारोंमें कबायली कलेन्डरका कितना बड़ा हिस्सा जाया करता है? क्या इन त्यौहारोंके द्वारा संथालोंके पड़ौसी हिन्दुओंकी वृहत्-परम्परा प्रकाशित होती है? अगर हां, तो किस प्रकार? इन त्यौहारोंमें कौन से परिवर्तन आरहे हैं और इन परिवर्तनोंके लिये कौनसे सम्मानित कारण दिये जा सकते हैं? निर्विवाद रूपसे इन सभी प्रश्नोंका उत्तर हमारे लिये देना कठिन होगा, क्योंकि हमारी सूचनायें सभी प्रकारसे पूर्ण नहीं हैं।

वर्तमान अध्ययनके संदर्भमें ये दो गांव एक प्रकारसे तुलनात्मक तस्वीर पैदा करते हैं। दो सौ आबादी वाले पारगोतिलैया पहाड़ीगांव में नौ कुर्मी (एक हिन्दू जाति विशेष, जिसका पानी चलता है) परिवारोंका एक टोला है। लेकिन अपेक्षाकृत अधिक खुले और तीन टोलोंमें दो सौ छः व्यक्तियोंसे बसे कारीचट्टान गांवमें केवल संथाल ही रहते हैं। बहुत हद तक आदि जाति (Primitive) अपनेको कृषक समुदायमें बदल चुकी है। पितृसत्ता पर आधारित वंशानुगत मुखियागीरी इनकी परम्परा रही है। लेकिन इनके यहां ऊंच-नीचका भेदभाव नहीं रहा है। संथालोंकी सर्वप्रधान क्षेत्रीय इकाई (गांव और कभी-कभी टोला-मुहल्ला) का वंशानुगत धार्मिक मुखिया धर्ममाझी या धर्मनायक होता है। धर्मनायकके दो मुख्य सहायकों — जगमाझी और कुटुम्बमाझी — की नियुक्ति भी लगभग वंशानुगत विधिसे मुख्य धार्मिक पुरोहितके द्वारा होती है। एक संथाल गांवमें यह त्रिमूर्ति सभी प्रकारके सामाजिक आचरणोंके लिये जवाब देह मानी जाती है (सिनहा, ए० सी० – १९६७)। आर्थिक दृष्टिकोणसे ये पद काफी आकर्षक नहीं माने जा सकते, क्योंकि ये सभी पदाधिकारी अपने रोजमर्राका आंशिक समय नहीं दे पाते हैं। फलस्वरूप हिन्दू पुरोहितों या मुसलमान उलमाओंके समान इन्हें दक्षिणा या फीस नहीं मिलती। यह बात सही है कि ये तीनों धार्मिक आचरणोंके विशेषज्ञ होते हैं। लेकिन सामान्य जीवनमें ये कबायली गांवके दूसरे आम लोगोंकी तरह ही रहते हैं। संथाल समाजमें सभी औरतोंको सम्भावित जादूगरनी समझा जाता है। यही कारण है कि धार्मिक आचरणोंमें इन्हें किसी तरहका हिस्सा नहीं लेने दिया जाता। अगर किसी देवस्थान पर पूजा-पाठ हो रहा हो, तो वहां नारी-जातिका प्रवेश हर तरहसे निषिद्ध होता है। ऐसे अवसरों पर अधिक से अधिक नारी जातिको नाच गान या हंड़िया (चावलकी बनी एक जनपदीय बीयर) चुआनेके समान गैरमजहबी काम करने पड़ सकते हैं।

---

*मानविकी एवं समाजविद्या विभाग,
भारतीय तकनीकी संस्थान कानपुर — १६

त्यौहार विशेष के मनाये जानेके लगभग एक सप्ताह पहले संथाल पुरोहितके घर पर गांवके बुजुर्गोंकी एक अनौपचारिक बैठक बुलायी जाती है, जिसमें त्यौहारके लिये दिन निश्चित किया जाता है। इस बैठकमें प्रत्येक परिवारका मुखिया चन्देकी अपनी राशि पुरोहितों को बताता है। चन्देकी रकम रुपया १२) से रुपया २.०० तक हो सकती है। पुनीत विशेषज्ञों (Sacred specialists) की त्रिमूर्ति सामूहिक रूपसे चन्देकी रकमको वसूल करनेके लिये जिम्मेदार होती है। नये बांसकी ताजी टोकरियां तुरी (टोकरी बुननेवाली एक अछूत हिन्दू जाति) को पारस्परिक फीस देकर प्राप्त की जाती हैं। पड़ौसके साप्ताहिक बाजारसे प्रसाद बनाने और पानी लानेके लिये मिट्टीके नये बर्तन खरीदे जाते हैं। (वैसे शोधकर्त्ता ने रोजमर्राकी जिन्दगीमें घर पर इस्तेमाल होनेवाली बाल्टियोंको देवस्थानों पर पानी लानेके लिये प्रयुक्त होते पाया।) इसी प्रकारसे सिन्दूर, सरसोंका तेल, बताशे, गुड़ आदि बाजारसे लाये जाते हैं। शालवनोंके पत्तोंसे देवस्थान पर ही दोने बना लिये जाते हैं। परिवार विशेष अपनी मान्यताके मुताबिक पक्षियों, बकरों और सूअरोंको उनके बचपनसे ही बलिदानके लिये छांटकर अलग कर लेते हैं। किन्तु विशेष अवसरों पर भैंसे, बकरे और सूअर सामूहिक रूपसे खरीदकर बलि दिये जाते हैं। संथाल त्यौहारोंकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, जिसमें भूत-प्रेतोंको चावल की दारू न चढ़ायी जाय और गांव वाले छककर उसका पान न करें।

किसी प्रकारके देव, भूत-प्रेत या अमानवीय शक्तिकी पूजा से सम्बन्धित समाजिक त्यौहार पुनीतवाग (Sacred grove जहाराथान) पूर्वजस्थान (बूढ़ाथान) और कालीस्थान (माई थान) के पास सम्पन्न किये जाते हैं। अनुष्ठानके पूर्व मुख्य पुरोहित पर कुछ पाबन्दियां लगायी जाती हैं। व्रत विशेषकी पिछली रात्रिको पुरोहित मिट्टीके नये बर्तनमें अपना भोजन अपने आंगनमें अलग बनाता है, गोबर मिट्टीसे लिपे पुते स्थानपर सोता है और नारी समागम से परहेज रखता है। इन पाबन्दियोंको निश्चित रूपसे पालन न करने पर विश्वास किया जाता है कि परिणाम मरणान्त एक होगा। त्यौहारके दिन तड़के पुरोहित एक अछूते स्थान पर स्नान करता है। सारे समुदायकी ओरसे पुरोहित भूत-प्रेतोंको फल-फूल, मदिरा-मांस चढ़ाता है। मंत्रोच्चारण करता है और अमानवीय शक्तियोंसे अपने समुदायके लिये आशीर्वाद अर्चना करता है। वास्तवमें अपने दोनों सहयोगियोंके साथ वह समुदाय और मानवेतर शक्तियोंके बीच मिलाप करता है। पूजनके कुटुममांझी पुरोहितका खास मददगार होता है। जगमांझी पुनीत सेवक (Sacred Servant) का काम करता है। उसका काम ऐसे अवसरों पर लोगोंको इकट्ठा करना, पूजाके लिये पानी लाना, दोने बनाना, प्रसाद बांटना आदि हुआ करता है। त्यौहारोंके दिन कबायली गांवोंमें अमूमन सामूहिक छुट्टीके दिन होते हैं। सभी बच्चे, वयस्क और बूढ़े देवस्थानों पर एकत्रित होते हैं। लेकिन यह बात नजरमें रखी जाती है कि नारी जातिका कोई सदस्य किसी प्रकार इन स्थानों पर प्रकट न हो जाय।

जाहिर है कि खेतिहर हिन्दुस्तानके समान इनकी अर्थव्यवस्था भी मानसूनकी कृपा पर आधारित है। कबीलेके लोग मानसून की पहली बौछारका उत्सुकतासे इन्तजार करते हैं। बारिश की पहली बौछार इनमें एक नई उमंग भरती है और तब ये एक बड़ी अच्छी फसल की आशा में सक्रिय हो उठते हैं। इस तरह मानसूनसे फसल होती है और फसलोंसे त्यौहारों को मनानेकी प्रेरणा मिलती है। इसके चलते साल भर कई तरहके त्यौहार मनाये जाते हैं। इन त्योहारोंको अलग-अलग वर्णन करनेकी अपेक्षा इनकी खूबियोंके साथ इन्हें हम एक सारिणी द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं:

सारिणी : १ : हजारीबागके दो संथाल गांवोंमें मनाये जानेवाले त्यौहार

क्रम	स्थानीय नाम	दिनांक, पक्ष	माह	साम्प्रदायिक उद्भव	विशेषतायें
१–	धुर्या पूजा	अनिश्चित	आषाढ़ (जून, जुलाई)	कबायली	बीजारोपण
२–	हरिहरसीम	अनिश्चित	सावन (जुलाई)	कबायली	हरियालीका त्यौहार
३–	बालझाल	दूसरा पक्ष दूसरा सप्ताह	भादों (अगस्त-सित०)	कबायली	नये मोटे अन्न का त्यौहार
४–	दशहरा एवं काली पूजा	१०वां दिन दूसरा पक्ष	आश्विन (अक्तूबर)	हिन्दू	कालीमाताका त्यौहार
५–	जंथार (बालझाल)	अनिश्चित	अगहन (नवम्बर दिसम्बर)	कबायली	नये अन्न (धान)का त्यौहार
६–	मकरसंक्रांति	७वां दिन दूसरा पक्ष	पौष (जनवरी)	हिन्दू	सूर्य पूजा
७–	सोहराय	दूसरा पक्ष	पौष (दिस०-जनवरी)	कबायली	पूर्वज पूजा
८–	माघपर्व	दूसरा सप्ताह दूसरा पक्ष	माघ (जन०-फर०)	कबायली	संथाल वर्षकी समाप्तिका त्यौहार
९–	करम या बाँहा पर्व	पहला सप्ताह दूसरा पक्ष	चैत्र (मार्च-अप्रैल)	कबायली कबायली	बसन्तोत्सव या सालवनोंके फलनेका त्यौहार
१०–	बंझार	अनिश्चित	(वैसाख (अप्रैल-मई)	कबायली	प्रतीकात्मक वार्षिक शिकार का त्यौहार।

वर्तमान अध्ययनके सन्दर्भमें संकलित माहिती तत्कालीन संथाल समाजमें परिवर्तनकी दिशा, गति और मात्रा सूचित करती है। ये त्यौहार ऐसे अवसर उपस्थिप करते हैं, जो सामाजिक सम्बन्धों और सामाजिक गठनको मजबूत बनाते हैं। ये त्यौहार ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर होते हैं, जबकि फसल बोनेके पहले कबायली भूत-प्रेतोंमें फिरसे आस्था प्रकट किया करते हैं या समुदायकी ओरसे मानवेतर शक्तियोंके प्रति अच्छी फसलके लिये आभार प्रकट किया जाता है, या जादू विशेषके द्वारा सम्भावित संकटको टाला जाता है। चर्चित समाजमें परम्परासे आत्म-तत्त्व (Soul Substance) के लिये बलिदान और प्रार्थना तथा उर्वरापंथ (fertility cult) के आचरणके द्वारा इनके खेतोंका उपजाऊपन प्राप्त किया जाता रहा है। आज भी ऐसा विश्वास किया जाता है कि समुदायकी सम्पन्नता और कल्याणके लिये सभी प्रकारके पारस्परिक नृत्योंको उचित रूपसे नाचना, सभी संस्कारोंको ज्यों का त्यों पूरा करना और परम्परा सम्मत किसी भी संस्कारको नहीं छोड़ना अत्यावश्यक है। दुष्ट भूत-

प्रेतोंकी बुराइयोंसे बचनेके लिये जादू और धर्म सम्बन्धी अनुष्ठान किये जाते हैं। इन आचरणोंसे विभिन्न मानवेत्तर शक्तियोंसे, जिनका आकार-प्रकार अनिश्चित माना जाता है, आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी मान्यता है कि ये शक्तियां अपने भक्तोंके द्वारा समुचित रूपसे अर्चना करने पर उनकी सहायता करनेके लिये वायुमंडलमें यों ही इधर-उधर मंडराया करती हैं सामुदायिक कल्याणके लिये इन त्यौहारोंका मनाया जाना निर्विवाद माना जाता है। इन त्यौहारोंके अभावमें क्या स्थिति होगी? – यह प्रश्न कवायलियोंकी कल्पनासे परेकी चीज है, क्योंकि ऐसी स्थितिका सामना कभी नहीं किया गया।

संथाल कृषकोंके यहां ४० प्रतिशत त्यौहार खेती सम्बन्धी हैं। पुराने जमानेमें ये लोग शिकार और कन्दमूल पर निर्भर रहते थे। आज भी छोटे पैमाने पर जंगलोंसे पायी जानेवाली खानेकी चीजोंके जरिये ये लोग अपनी माली हालतमें राहत महसूस करते हैं। परम्परासे ही इनके यहां तत्कालीन उपभोगसे बचे खाद्य पदार्थका संग्रह नहीं किया जाता; बल्कि इसका सर्वाधिक स्वाभाविक और मूल्यवान उपयोग उपहारोंकी अदलाबदलीमें माना जाता रहा है। इस प्रकार बलिदान और अर्पणका मूल उपहारोंके मनोविज्ञानके पीछे देखा जा सकता है। दूसरी तरफ, पूजन-अर्चन खेतोंसे होनेवाली पैदावारके अनुपातमें किया जाता है जैसे कि मानवेत्तर शक्तियां भी संथालोंसे किसी प्रकारके लेन-देनके व्यापारमें साझी हैं। इस सन्दर्भमें स्मरणीय है कि १९६४-६५के जान्थारके अवसर पर पारगोतिलैयाके पुरोहितने पक्षी या पशुकी बलि नहीं दी। शोधकर्ताके प्रश्नके उत्तरमें उसने बताया कि पूजन खर्चमें किफायतसारीकी वजह और अच्छी फसलका न होना है। जब फसल ही नहीं हुई है, तो पूजा कहांसे करें?

त्यौहारोंके अवसर पर संथाल बड़ी मुश्किलसे फ़िजूलखर्ची कर पाते हैं। ऐसे अवसरों-पर चन्देकी रकम परिवारोंके मुखिया स्वयं प्रकट करते हैं। बलिके लिये पशु-पक्षी भी पैदाइश ही रखे जाते हैं। जाहिर है कि इन सबके चलते परिवार विशेष बहुत बड़ी आर्थिक हानि नहीं उठाता। अपेक्षाकृत महंगे पशुओंके बलिदानका खर्च सारा गांव सामूहिक रूपसे तथा जुर्मानेके रूपमें वसूल की गई राशिसे करता है। इस गांवका प्रत्येक परिवार गांवके सामूहिक जीवनमें निश्चित रूपसे भाग लेता है। इन त्यौहारोंके बहाने संथाल बच्चों और वयस्कोंको चन्द नये कपड़े मिल पाते हैं। यह गौर करनेकी बात है कि त्यौहारोंकी अनुपस्थितिमें इस जरूरतको नजरअन्दाज कर दिया जाता है। शायद ही कोई ऐसा संथाल त्यौहार होगा जिसमें किसी न किसी रूपमें मदिरापान नहीं किया जाता हो। संथाल समाजमें न तो सप्ताहान्तकी छुट्टी होती है, न हिन्दुओंके समान त्यौहारोंकी प्रचुरता और न राष्ट्रीय त्यौहारोंकी पहुंच ही है। सारिणीमें दिये गये सभी त्यौहारोंको मिलाकर संथालोंके लिये सालाना बीस दिनोंकी छुट्टियां हो पाती हैं। जाहिर है कि ये त्यौहार समुदायके लिये अत्यन्त आवश्यक हैं, किन्तु इनमें वे नाममात्रकी पूंजी खर्च करते हैं और जरूरतसे अधिक समय नहीं जाया करते। इसके विपरीत ये त्यौहार आदमीको जीनेके लिये दिलचस्पी, पारिवारिक बंधन, सामाजिक एकता और सामुदायिक भावनाओंको बढ़ानेमें बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं।

माघपर्व और वसन्तोत्सव मौसमी त्यौहार हैं। सोहराय और मकरसंक्रान्ति त्यौहारोंके गैर-मजहबी हिस्से ज्यादा जानदार हैं और इनमें दिल बहलाव पर ज्यादा जोर दिया जाता है। ऐसे अवसरों पर संथाल अपने रिश्तेदारोंके यहां तशरीफ लाते हैं। चारों ही (उपरोक्त) त्यौहार धानकी फसल कटनेके तुरन्त बाद मनाये जाते हैं। क्योंकि फसल कटनेके बाद यह सर्वाधिक उल्लासका समय होता है। ऐसे अवसरों पर मनोरंजनके तरह तरहके

तरीके अपनाये जाते हैं यथा नाच-गान करने, दावतें उड़ाने, निषिद्ध यौन सम्बन्ध आदिके द्वारा जीवनकी एकरसता और कड़वाहटको बहुत हद तक भुलाया जाता है।

इन चर्चित संथालोंने अपने पड़ौसी हिन्दुओंसे दो त्यौहार अपनाये हैं: मकरसंक्रान्ति और दशहरा। लेकिन इन दोनोंको ही कबायली परम्परामें ढाल लिया गया है। दशहरेका त्यौहार संक्रमणकालीन स्थितिका उदाहरण है। कारीचट्टान गांवके सिन्झूगढ़ टोलेमें दशहरा पारिवारिक त्यौहारके रूपमें मनाया जाता है। लेकिन केवल उन्हीं आधे दर्जन परिवारोंमें, जिनका कोई न कोई सदस्य बंगाल या असममें रह चुका है। पारगौतिलैया गांवके तिलैया टोलेका कबायली पुरोहित टोलेकी तरफसे यह त्यौहार अपनी कबायली परम्पराके आधार पर मनाता है। लेकिन उसी गांवके दूसरे छोर पर बसे हुए पारगो मुहल्लेके मुखिया (हिन्दू-गैर कबायली) की अगुआयीमें पूरा गांव हिन्दू विधिसे दशहराके अवसर पर काली पूजाका आयोजन करता है। इस अवसर पर पड़ौसी गांवसे ब्राह्मण, पुरोहित, नाई, घटवार (पेशेवर पुनीत कसाई) और माली बुलाये जाते हैं, जिन्हें उनकी निश्चित सेवाओंके लिये पारम्परिक दक्षिणा देनी पड़ती है। इन पुनीत विशेषज्ञोंके साथ साथ हिन्दुओंकी बहुतसी मान्यतायें यथा पवित्रता, छुआछूत, उपवास, दक्षिणा आदि भी संथाल समाजमें प्रश्रय पाने लगे हैं।

संक्षेपमें हमने संथाल कबीलेके सालाना त्यौहारकी तसवीर पेश की है। इन त्यौहारोंसे कबायली जीवनके कुछ पहलुओंके समझनेमें मदद मिलती है। त्यौहारोंके आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, जादुई और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर भी हमने प्रकाश डाला है। एक जीवित संस्कृति होनेके नाते संथाल त्यौहारोंका परिवर्तनकी तरफ झुकाव है। लेकिन इनकी अपनी तसवीर सबल और सक्षम है। इन्हें देखकर कहा जा सकता है कि ये परम्परायें संथाल लघु-परम्पराओंके रूपमें भारतीय बृहत्-परम्पराओंके साथ लेन-देन करनेमें काफी अरसे तकके लिये सफल हो सकेंगी।

टिप्पणी एवं संदर्भ:

लेखक प्रस्तुत निबन्ध सम्बन्धी माहिती संकलनमें सहयोग लिये सुश्री रशीदा हुसैन और लेखको संयोजित करनेमें श्री रासबिहारी लाल, शोध अधिकारी, आदिवासी शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अहमदाबादके सुझावोंके लिये आभारी है।

सिनहा, ए० सी० १९६७

लीडरशिप इन द ट्राबल सोसायटी "मैन इन इन्डिया" वो० ४७ (३)